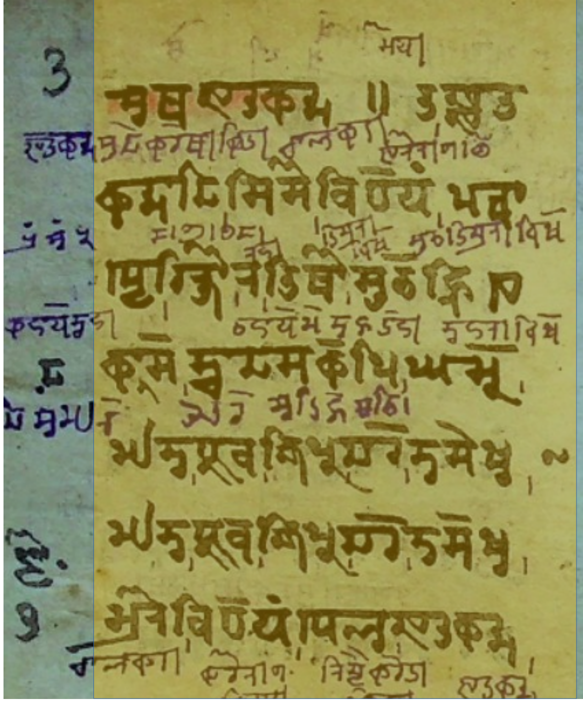
Manu 6

Title : Jyotisha Manuscript (includes Simantonayan -Punsavan-Jatakarma-others)
(Missing pages)



जातकर्म

जन्मतोऽनन्तरं कार्यं जातकर्म यथाविधि ।
दैवादतीतकालं चेदतीते सूतके भवेत् ॥ १५ ॥

जन्म के उपरान्त ही जातकर्म यथाविधि करना चाहिए । यदि दैववशात् उस समय न हो सके, तो जब जननाशौच व्यतीत हो, तब करना चाहिए ॥ १५ ॥

मृदुध्रुवचरक्षिप्रभेष्वेषामुदयेऽपि च ।
गुरौ शुक्रेऽथवा केन्द्रे जातकर्म च नाम च ॥ १६ ॥

मृदु, ध्रुव, चर और क्षिप्र नक्षत्रों में जब बृहस्पति या शुक्र केन्द्र में हों, तब जातकर्म और नामकर्म करना चाहिए ॥ १६ ॥

नामकरणम्

तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं
पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि ।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे
मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥ १७ ॥

Ref https://archive.org/details/wg519/page/n125/mode/2up?view=theater

[illegible]

मया

5

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

13

[illegible]

25 [illegible]

[illegible]

[illegible]

03 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

डिषय:

डिषय:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

45

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

13

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

53 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पिरक भवे नि[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।।